International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493; Impact Factor: RJIF 5.46
Received: 22-09-2020; Accepted: 07-10-2020; Published: 23-10-2020
Volume 2; Issue 4; 2020; Page No. 15-16

डॉक्टर शंकर शेष रचित 'खजुराहो का शिल्पी' नाटक में युग बोध और मूल्य बोध

पी. राजरत्नम
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, तमिलनाडु केंद्रीय विश्वविद्यालय, तिरुवारूर, तमिलनाडु, भारत

प्रस्तावना

रेडियो प्रसारण हेतु लिखी गई इस नाटक में कुल छः दृश्य हैं और आठ पात्र हैं (छः पुरुष पात्र, दो स्त्री पात्र) जिसके माध्यम से नाटक कार, शंकर शेष के लम्बे चिंतन और मनन की उपज हैं । नाटककार ने इस नाटक में गंभीर दर्शन एवं प्राचीन काल से संसार में होनेवाले माया, मोह के संघर्ष को नए ढंग से प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। अनेक प्रयत्नों के बावजूद भी मानव में काम भावना बनी रही हैं। प्राचीन काल से ही मनुष्य की सकाम और निष्काम प्रविर्तियाँ एक गतिशील भाव बनकर स्थाई रही है संयोग के आनंद के बारे में सुप्रसिद्ध महाकवि तमिल तिरुवल्लुवर भी कहते हैं-

पंचेन्द्रिय सुख, रूप और स्पर्श गंध रस शब्द उज्जवल चूड़ी से सजी, इस में सब उपलब्ध। पंचेन्द्रियों के द्वारा सुख स्त्री में निहित है काम और मोक्ष में से काम को प्रधानता देकर संसार पर हावी होनेवाले मोह का क्षण दर्शन संघर्ष को लेकर उपस्थित हुआ है हम जानते है मोह का क्षण ही मानव को पतनोन्मुखी भी बनाता है और उन्नवमुखी भी। बस इन्ही क्षणों के उतार चढाव में 'मोह' और 'मोक्ष' का मार्ग का रहस्य छिपा है जिसे व्यक्त करना ही नाटककार का उद्देश्य रहा है।

डॉक्टर शंकर शेष के नाटक में युग बोध मूल्य बोध को समझाने के पहले युग बोध और मूल्य बोध को समझना सही मानता हूँ, सभी सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक परिश्थितियां मिलकर एक दौर बनाती हैं इसी दौर को युग- विशेष की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। बृहत् हिंदी कोष में युग का अर्थ है समय काल जमाना आदि। काल प्रवाह का एक भाग है जो किसी कार्य विशेष या घटना से जुड़कर युग कहलाता है। युग की परिभाषा में काल के साथ समाज की गतिविधिया और उसके प्रकार भी सम्मिमिलित हो जाते है। युग समाज की कालगत स्थितियों का प्रतिनिधितव करता है जैसे समाज, सभ्यता, संस्कृति, कला, साहित्य, इतिहास आदि का बोधक होता है।

जीवन दृष्टि को ही मूल्य कहते हैं। मूल्यों का उदय मानव द्वारा जीवन में से मानव के लिए होता है। सभी आधुनिक दर्शनों एवं विचारधाराओं ने मानव को ही सर्वोपरि सत्ता के रूप में प्रकट किया है। समय के साथ बदलती परिस्थितियों में मूल्यों के विघटन, परिवर्तन, उसकी ग्राहकता और विवेक मानव के भौतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक भावों तथा विचारों की अन्तः संगती का दूसरा नाम है। मूल्य के अर्थ है चेतना मजदूरी जो मूल्य में हो आदि मूल्य शब्द का अर्थ मोल लेना।

मूल्य' वैचारिक इकाई है जिसे आधार न बनाकर व्यक्ति अपना जीवन जीता है और उसे आत्मोपलब्धि होती है पंत (कविवर) जी के अनुसार- 'मूल्य मर्यादा की प्रगति के स्रोत को केवल सामाजिक परिस्थितियों के अधीन मानना उतना ही एकांगी दृष्टिकोण है जितना उसे केवल मनुष्य के आतंरिक संस्कारों में मानना हैं मानव मूल्य बहार इतर दोनों ओर फैले हुए हैं।

बोध शब्द से तात्पर्य किसी वस्तु विषय धारा, व्यवहार का ज्ञान माना जाता है इसे चेतना का समानार्थ भी कह सकते हैं। बोध स्वयं को अपने आस पास के वातावरण को समझने तथा उसकी बातों का मूल्यांकन करने की शक्ति का नाम है मूल्य बोध के विभिन्न आयामों में से एक है सांस्कृतिक बोध।

यह नाटक ऐतिहासिक कथावस्तु वहन करनेवाला एक ऐसा संघर्षशील नाटक है जो कलात्मक अभिव्यक्ति के जरिए हमें ऐसे जीवनदर्शन की ओर ले जाता है जहां आदमी आदमी नहीं रहता । यानी वह पर्याप्त आध्यात्मिक योगी बन जाता है नाटक का अंतिम भाग जिस अध्यात्म की सिख देता है जो देखने के बाद इस कृति को आदर्शवादी कृति कहना उपयुक्त होगा खजुराहो का शिल्पी नाटक ईसा की दसवीं ग्यारहवीं सदी का उल्लेख है। इस में चन्द्रायै वंश का राजा यशेवरमन की धर्म नगरी मध्यदेश की खर्जूरह यानी खजुराहो का वर्णन है। इन खजुराहो के मंदिरों का सबसे भीनं वैशिष्ट्य है, उनकी भीली पर एक साथ श्रृंगारिक और आध्यात्मिक चित्र खुदे हुए है। मंदिर के चित्र तीन भागों में बटे हुए है जो बहरी भाग मिथुन- मूर्तियों से सजा है। मध्यभाग पुराण कथाओं के माध्यम से ईश्वर की विभिन्न अवतारों की उद्भावना करता है और अंतिम भाग मंदिर का गर्भगृह है जिसमे ब्रह्मा की स्थापना करके मंदिर की त्रिमितीय रचना की गयी है। इस मूल ऐतिहासिक सत्य को लेकर नाटककार शंकरशेष ने एक विवादशपद विषय को मनोविन्दुवान और संवेदना के स्तर पर उठाया है।

तमिलनाडु के पुडुकोटि जिले में पेरुंगलुर नामक जगह पर इसी प्रकार का एक छोटा सा मंदिर जो भगवन अय्यप्पन (शास्ता) मल्यालमृणगुर का शिल्प है जिसके बहार चारो तरफ मिथुन मूर्तियां और उक्त भगवन का सम्बन्ध न होते हुए भी मानना पड़ेगा की यह भी जीवन का एक अंश है। खजुराहो के मंदिर की त्रिमितीय रचना के अनुसार ये तीनो स्तर संसार के तीनों वर्गो में बटे लोगो के प्रतिक नजर आते है। पहला वर्ग मिथुन रतियों के सामान निरंतर भोग लिप्सा में डूबा रहना चाहता है। आज भी यह स्थिति जनता में कहीं देखा जा सकता है दूसरा वर्ग भोग लिप्सा को चाहता है लेकिन उस में तल्लीन रहना नहीं चाहता जो भोग से होकर मोक्ष की कामना चाहता है। उन्हे ज्ञात है वासना, त्याग के बिना आदमी को चयन से और सूर्य पर सयं करने से संपूर्ण ज्ञान की उप्लभ्धि होती है तीसरा वर्ग भोग से बिलकुल विरक्त होकर अध्यात्म में लीन रहना चाहता है यानि कहते है- 'भोगों की तृस्ना एक ऐसी अक्ष्य प्यास है जो कभी शांत ही नहीं होती। लोग सुख के भ्रम में जवानी में भोगों के प्रति आकर्षित रहते है उसके परिणाम पर विचार नहीं करते। आज शक्ति होने पर जो वे अपनी वृतितयों को भोगो के गुलाम बनाय दे रहे है। उस अशक्त भोगो की प्यासी वृतियां कथा शत्रु की तरह त्रास न देंगी। भोग एक प्रज्वलित अग्नि इ समान है इसको जितना ही भोगा जाता है इनकी ज्वाला उतनी

ही बढ़ती जाती है और धीरे धीरे एक दिन मनुष्य की सारी सुख शांति की सम्भावनाओ को सदा के लिए भस्म कर देती है इस ऐतिहासिक रहष्य में छिपे रहश्य और दर्शन का सन्दर्भ देना नाटककार का मुख्या उद्देश्य रहा है जीवन की परिपूर्णता श्रृंगार और भोग के बाद ही अध्यात्म में है जीवन के भोग और तदुजन्य अनुभव लिए बिना अध्यात्म तक पहुंचना एक समस्या है इसलिए भोग में रत हुए बिना उदलीकरण लगभग असंभव है अगर इस हलाहल का स्वाद लिए बिना ही तष्ठा से अध्यात्म की ओर जाने का प्रयास हुआ तो वह जीवन से पलायन हो जाता है खजुराहो का शिल्पी नाटक में शिल्पी के संवाद इसी सत्य को पुष्ट करते है महाराज ये प्रतिमाएं सांसारिक आकर्षण की चरम सीमाएँ बनकर मनुष्य के सामने मोह का क्षण प्रस्तुत करती है यदि वह इस क्षण में ग्रसित हुआ तो वह पुनः संसार में लौट जायेगा और कहीं उसने इसे जित लिया तो यही क्षण अध्यात्म के राज पद पर प्रस्थान- बिंदु बनेगा।

खजुराहो का मंदिर इसी सत्य को कहने के लिए त्रिमितिया मूर्तियों का आधार मानकर इस सत्य को नाटककार ने जीवंत चरित्रों के माध्यम से कहने का प्रयास किया है नाटककार अगर खजुराहों की मूर्तियों को माध्यम बनाकर इन घटनाओं को यथातथ्य रूप में प्रस्तुत करता है तो जीवन की गरिमामयी दिशा के संकेत नहीं दे पाता। वह केवल इतिहास का एक संकलन एवं ऐतिहासिक कथा मात्र बनकर रह जाता है यह कथा मानव के उत्थान और पतन की कथा बन सकी है और उसे कई कई युगों से जोड़ने में नाटककार की कुशलता व्यक्त हुई है, जिससे शाश्वत मानवीय सत्य व्यक्त हुआ है ।

इस नाटक के सभी पात्र ऐतिहासिक होते हुए भी सामान्य मनुस्य की प्रविर्तियों के प्रतिक बनकर आये है। अलका और महारानी पुष्पा के व्यक्तितव समर्पित स्त्री जीवन के चित्र है इन दोनों पात्रों में आम जनता के हृदय की भावनाएँ पाई जाती है और अलका का जीवन युग- युग का सत्य है जो नाटक के कथ्य को अधिकाधिक प्रस्तुत करता है एवं अध्यात्मिक जीवन की परिभाषा देती है अलका का कथन अत्यधिक भोग से योग की ओर ले चलती है वह एक सन्दर्भ में कहती है की यह संसार तो कमजोर लोगो का है यहाँ भूख लगती है शरीर तप्त है इसलिये शिल्पी अध्यात्म छूटते देर नहीं लगती महाराज यशोवर्मन ऐतिहासिक व्यक्तित्व के अलावा एक आम पिता के रूप को व्यक्त करती है चंदवर्मा भारतीय परम्पराओं के भारवाही मात्र रह गए है जो किसी भी युग में पाए जाते है। इस प्रकार नाटककार ने इतिहास के खोक से अपना समय का संकेत प्रक्षेपित कर ऐतिहासिक पात्रों घटनाओं के अनुरूप परिवेश निर्माण करके पात्रों युग और भेद के साथ विश्लेषित और परिभाषित किया है खासकर यशोवर्मन एक सामान्य पिता का रूप धारण कर एक कला प्रेमी के रूप में भी अपना स्थान ग्रहण कर मोह के क्षणों को जितने वाले मंदिरों का निर्माण कर लेता है और क्रन्तिकारी योजना को प्रोत्शाहित भी करता है एक बहुआयामी आदर्श चरित्र प्रजा के रक्षक के रूप में भी उन्हे दिखाकर आधुनिक संगति में आदर्श मानवीय रूप में डॉक्टर शंकर शेष प्रस्तुत करते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. रामजी तिवरी हिंदी समीक्षा में काव्य मूल्य पृष्ठ संख्या १५ .
2. महादेवी वर्मा नवनीत जुलाई अंक पृष्ठ संख्या ३६.
3. संपादक कलिका प्रसाद बृहत् हिंदी कोष पृष्ठ ९३०.
4. सं द्वारिका प्रसाद शर्मा संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ खंड भ पृष्ठ संख्या 365.